

40-1211
12-13
31-50



LET'S CRACK IT!

PRICE HIKE ALERT!!

Start Your **NTA UGC NET**
Preparation Today

HURRY UP

Subscribe Now



3 17 21

Price Hike
NTA UGC NET
Preparation Today
Hurry Up
Subscribe Now

आधुनिक काल का परिचय

- भारतीय इतिहास का आधुनिक काल 19वीं शताब्दी से प्रारम्भ होता है। साहित्य में आधुनिक काल का प्रारंभ भारतेन्दु से होता है। आचार्य शुक्ल ने आधुनिक काल की समय-सीमा 1843 ई. से 1923 ई. तक मानी है। आधुनिक काल को विद्वानों ने विभिन्न नाम दिए हैं – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आधुनिक काल को 'गद्यकाल', डॉ. रामकुमार वर्मा, 'आधुनिक काल' , मिश्रबन्धु 'वर्तमान काल' तथा गणपतिचन्द्र गुप्त आधुनिक काल नाम देते हैं। आधुनिक काल में साहित्य रीतिकालीन दरबारी परिवेश से निकलकर जन-जीवन

के निकट आया एवं इसी काल में अनेक गद्य विधाओं का विकास हुआ। इस काल में खड़ी बोली में कविताएँ लिखी जानी आरम्भ हुई। यह राष्ट्रीय चेतना का काल कहलाया।

हिन्दी गद्य का उद्भव और विकास (भारतेन्दु पूर्व हिन्दी गद्य)

- हिन्दी गद्य उद्भव और विकास ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली दोनों भाषाओं में हुआ। इसके विकास में कलकत्ता में 1800 ई. में स्थापित फुर्ट विलियम कॉलेज की प्रमुख भूमिका रही। लल्लू ला जी ने 'प्रेमसागर', सदल मिश्र ने 'नासिकेतोपाख्यान' सदासुख लाल ने 'सुखसागर' औश्र इंशा अल्लाह खाँ ने रानी केतकी की कहानी की रचना की। इन सभी रचनाओं ने साहित्य में खड़

बोली और ब्रजभाषा से संबंधित अनेक रचनाएँ कीं।

ब्रजभाषा गद्य की प्रारम्भिक रचनाएँ

- रामचन्द्र शुक्ल जी के अनुसार बल्लभाचार्य जी के पुत्र विट्ठलनाथ ने शृंगार रस मण्डन की रचना ब्रजभाषा गद्य में की, उसके बाद दो वार्ता ग्रन्थ लिखे गए हैं -

- चौरासी वैष्ण की वार्ता।
- दो सो बावन वैष्णव की वार्ता।

दोनों रचनाओं के रचनाकार गोकुलनाथ जी हैं। चौरासी वैष्णव की वार्ता 17वीं सदी में लिखी गई, बल्लभाचार्य के शिरोँ का जीवनवृत्त है। जबकि दो सौ

बावन वैष्णव की वार्ता औरंगजेब के काल में लिखी गई। इसमें गोसाईं विठ्ठलनाथ के शिष्यों का जीवनवृत्त है। 'अष्टयाम' की रचना नाभादास ने की है, उसमें भगवान राम की दिनचर्या का वर्णन है। यह ब्रजभाषा में लिखा गया गद्य है। गद्य लेखन का सम्यक् प्रचार-प्रसार न होने के कारण ब्रजभाषा गद्य का पूरा विकास नहीं हो सका।

ब्रजभाषा गद्य की प्रारम्भिक रचनाएँ व उनके रचनाकार

ब्रजभाषा गद्य की प्रारम्भिक रचनाएँ व उनके रचनाकार

रचनाएँ

रचनाकार

श्रृंगार

गोसाईं विठ्ठलनाथ

ब्रजभाषा गद्य की प्रारम्भिक रचनाएँ व उनके रचनाकार

<u>रचनाएँ</u>	<u>रचनाकार</u>
अष्टयाम	नाभादास
चौरासी वैष्णव की वार्ता	गोकुलनाथ
दो सौ बावन वैष्णव की वार्ता	गोकुलनाथ
अगहन माहात्म्य	बैकुण्ठमणि शुक्ल
वैशाख माहात्म्य	बैकुण्ठमणि शुक्ल

ब्रजभाषा गद्य की प्रारम्भिक रचनाएँ व उनके रचनाकार

<u>रचनाएँ</u>	<u>रचनाकार</u>
वैताल पचीसी	सुरति मिश्र

खड़ी बोली गद्य की प्रारंभिक रचना

खड़ी बोली गद्य की महत्वपूर्ण पुस्तक चन्द्र छन्द बरनन की महिमा है। यह कवि गंग द्वारा लिखी गई है। इसकी रचना सम्राट अकबर के समय में हुई थी।

1741 ई. में रामप्रसाद निरंजनी ने भाषायोग वाशिष्ठ नामक ग्रन्थ की रचना खड़ी बोली में की। निरंजनी जी के गद्य से स्पष्ट है कि मुंशी सदासुख लाल

एवं लल्लू लाल से पहले भी खड़ी बोली गद्य का परिमार्जित रूप था। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल निरंजनी जी को प्रथम प्रौढ़ गद्य लेखक मानते हैं।

- लल्लू लाल ने उर्दू, खड़ी बोली हिन्दी ब्रजभाषा तीनों में गद्य की पुस्तकें लिखीं। माधव विलास और सभा विलास नाम से ब्रजभाषा पद्य के संग्रह ग्रन्थ भी इन्होंने प्रकाशित किए। इन्होंने 'प्रेमसागर' में विष्णु पुराण के दशम स्कन्ध का हिन्द अनुवाद किया।
- सदल मिश्र बिहार के निवासी थे। ये फोर्ट विलियम कॉलेज में काम करते थे। कॉलेज अधिकारियों की प्रेरणा से इन्होंने खड़ी बोली गद्य की पुस्तक नासिकेतोपाख्यान लिखी।

- मुंशी सदासुख लाल दिल्ली के निवासी थे। इन्होंने विष्णु पुराण से प्रसंग लेकर एक पुस्तक लिखी, जो पूरी नहीं है। इन्होंने 'सुखसागर' में श्रीमद् भागवत् का हिन्दी अनुवाद किया है। मुंशी जी ने हिन्दुओं की शिष्ट बोलचाल की भाषा ग्रहण की और हिन्दी - उर्दू मिश्रित भाषा का प्रयोग किया।
- राजा लक्ष्मण सिंह आगरा के रहने वाले थे, उन्होंने 1861 ई. में आगरा से प्रजा हितैषी नामक पत्र प्रकाशित किया और 1862 ई. में 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का अनुवाद सरस एवं विशुद्ध हिन्दी में प्रकाशित किया।
- हिन्दी के रक्षकों में बाबू शिवप्रसाद सितारेहिन्द के साथ-साथ पंजाब के बाबू नवीनचन्द्र राय भी शामिल थे। उर्दू के पक्षपातियों से उन्होंने बराबर संघर्ष

किया। संक्षेप में, कहा जाता है कि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से पूर्व हिन्दी गद्य की दो शैलियाँ विद्यमान थी। एक तो उर्दू-फारसी के शब्दों से युक्त खिचड़ी हिन्दी-भाषा जिसका प्रतिनिधित्व शिवप्रसाद सितारेहिन्द कर रहे थे, तो दूसरी शैली संस्कृत शब्दों से युक्त विशुद्ध हिन्दी थी, जिसका प्रतिनिधित्व राजा लक्ष्मण सिंह की भाषा कर रही थी। भारतेन्दु जी न अपनी भाषा के लिए मध्यम मार्ग अपनाया।

- इंशा अल्ला खाँ उर्दू के प्रसिद्ध शायर थे, जो दिल्ली उजड़ने के बाद लखनऊ चले गए। इंशा ने 'रानी केतकी की कहानी' की रचना संवत् 1855 से 1860 ई. के बीच की। हिन्दी गद्य के चार प्रारम्भिक लेखकों में इंशा जी

की भाषा चटकीली औ मुहावरेदार है। इन चारों लेखकों का रचनाकाल लगभग 1800 ई. के आस-पास है, इसलिए हिन्दी गद्य का सूत्रपात 1800 ई. के आस-पास ही समझना चाहिए।

- राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' ने काशी ने 'बनारस अखबार' प्रकाशित किया। इस पत्र की भाषा में उर्दू का पुट था। राज शिवप्रसाद सितारेहिन्द ने निम्नलिखित पुस्तकें लिखी हैं -

- आलसियों की कीड़ा
- मानव धर्म का सार

- इतिहास तिमिरनाशक
- राजा भोज का सपना
- उपनिषद् सार
- भूगोल हस्तामलक

सितारेहिन्द जी हिन्दी के पक्ष में थे, इन्होंने बड़ी चतुराई से हिन्दी की रक्षा की अन्यथा मुसलमान नेता हिन्दी को स्कूली शिक्षा से बाहर कर देते। सितारेहिन्द जी ने हिन्दी की रक्षा के लिए महान कार्य किए। ये सर सैयद अहमद खाँ का बराबर विराधे करते रहे। ईसाई पदार्थियों ने हिन्दी गद्य के

विकास के लिए बाइबिल का हिन्दी में अनुवाद कर उसका वितरण कराया। आधुनिक काल में भाव व अभिव्यक्ति के लिए गद्य विकसित हो गया। ब्रजभाषा धीरे-धीरे समाप्त हो गई तथा साहित्य खड़ी बोली में रचना जाने लगा। राष्ट्रीयता वा स्वाभिमान की इच्छा इस युग में विकसित हो गई। एक ओर व्यक्ति रूढ़ियों व अन्धविश्वासों से मुक्त रहे थे, तो दूसरी ओर राष्ट्रीयता को आत्मसात् कर रहे थे। कविता, निबन्ध, उपन्यास एवं नाटक में यही नवजागरण का स्वर आधुनिक काल के साहित्य में दिखाई देता है।

खड़ी बोली गद्य की प्रारम्भिक रचनाएँ व उनके रचनाकार

<u>रचनाएँ</u>	<u>रचनाकार</u>
भाषायोग वाशिष्ठ	रामप्रसाद निरंजनी
पद्मपुराण का भाषानुवाद	पं. दौलतराम
मण्डोवर का वर्णन	पं. दौलतराम
सुखसागर	सदासुखलाल
नासिकेतोपाख्यान	सदल मिश्र
रानी केतकी की कहानी	मुंशी इंशा अल्ला खाँ

1857 की राज्यक्रान्ति एवं सांस्कृतिक पुनर्जागरण

1857 की क्रान्ति से प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम की शुरुआत मंगल पांडे न की। अंग्रेजी शासन को लगने लगा था कि अब भारतीय दासता स्वीकार नहीं कर सकते। चारों आरे राष्ट्रीय चेतना की लहर दौड़ गई। कविता में राष्ट्रीय देश-प्रेम की कविताएँ, नाटक इत्यादि रचे गए। अंग्रेजों की पोलें खोली गई। अंग्रेजी शासन में जो दुर्दशा हुई उसका नाटकों के माध्य से मंचन हुआ और जागरूकता फैलाई गई। इस प्रकार 1857 की राष्ट्रक्रान्ति से सांस्कृति पुनर्जागरण की लहर पूरे भारत में फैल गई। 19वीं शताब्दी के पूर्व नव-जागरण का सन्देश धर्म के

विभिन्न सम्प्रदायों द्वारा किया गया। जाति-पाँति, छुआ-छूत, ऊँच-नीच आदि सामाजिक मसलओं एवं कुरीतियों का विरोध धार्मिक सन्तों, सूफियों आदि के द्वारा किया गया। 19वीं शताब्दी के उपरान्त मूलतः वे धार्मिक तत्व नष्ट तो नहीं हुए, किन्तु उनका स्वरूप परिवर्तित हो गया। कहीं पर विशुद्ध भारतीय धर्म की ओर अग्रसर होने के लिए आन्दोलन छेड़ता है। कहीं इन दोनों के बीच समन्वयात्मक दृष्टिकोण लक्षित होता है। इन विभिन्न नव-जागरण की अवस्थाओं तक पहुँचने के लिए अनेक सामाजिक तत्व सहायक हुए हैं, जिनका वर्णन इस प्रकार है -

- शिक्षा अंग्रेजी शिक्षा पद्धति ने बाबुओं को उत्पन्न करने के साथ-साथ प्रतिभाशाली व्यक्तियों को भी जन्म दिया, जिससे उन्होंने विज्ञान, दर्शन एवं इतिहास का सर्वेक्षण किया तथा भारतीयों के हित के लिए आन्दोलनों का सूत्रपात किया।
- व्यापारिक नीति अंग्रेजों ने असीम लाभ अर्जित करने हेतु अपनी व्यापारिक दृष्टि केवल भारत तक ही नहीं बरन् सम्पूर्ण यूरोप तक फैलाई थी। भारत के अथाह कच्चे माल का उपयोग करने के लिए तथा उसे विभिन्न स्थानों तक पहुंचाने एवं उसका वितरण करने हेतु उन्होंने यातायात के साधनों का विकास

किया, जिससे समाज सुधारकों को भी आवागमन की सुविधा प्राप्त हो गई, जिसके परिणामस्वरूप वे एक सक्रिय संगठन बनाने में सफल हुए।

- सम्प्रदायवादी नीति – अंग्रेजों ने भारतीय हिन्दू-मुसलमान, आदिवासी, शूद्र एवं अन्य वर्गों के मध्य सदैव तनाव बढ़ाने का प्रयास किया, जिससे इनमें एकता स्थापित न हो सके, किन्तु उनका यह कुचक्र अधिक समय तक नहीं चला। भारतीयों ने सहिष्णुता के सिद्धान्त को अपनाकर अन्याय को सहन नहीं किया। इस नीति ने भारतीयों में जागृति को जन्म दिया। अनेक समाज सुधारक संगठन बने-ब्रह्म समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन आदि

उसी की देन हैं। आधुनिक युग के कर्मठ महात्मा गाँधी, नेहरू, विनोबा जी आदि महापुरुष उसी कड़ी में जुड़े हुए हैं।

- पाश्चात्य संस्कृति - पाश्चात्य संस्कृति के सम्पर्क में आने से भारतीयों के अन्धविश्वास, विधवा-विवाह, बाल-विवाह, पर्दा-प्रथा, अस्पृश्यता, वर्ण भेद आदि का उन्मूलन हुआ। पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित व्यक्ति समाज सुधार के कार्यों में संलग्न हो गए।
- मिशनरियों का कार्य इन मिशनरियों का कार्य एक ओर तो गरीब जनता की सेवा करना था तो दूसरी ओर अपने धर्म का प्रचार करना एवं अन्य जातियों

के व्यक्तियों को ईसाई बनाना था। इस कार्य में इन्होंने अनेक भारतीयों को नौकरियों का प्रलोभन दिया। मिशनरियों की स्वार्थी भावना ने देश में धार्मिक क्रान्ति उत्पन्न की, जिनका उद्देश्य इन मिशनरियों की निंदा करना था तथा हिन्दुओं को अपना धर्म परिवर्तन करने से रोकना था।

- प्रेस विकास प्रेस की उन्नति ने प्रचार-कार्य में सहायता प्रदान कर पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से देश में नव-जागरण की लहर को जन्म दिया। जन-समुदाय क्रान्ति एवं आन्दोलन की गतिविधियों से परिचित होने लगा। प्रेस की उन्नति से नव-जागरण के संदेश ने एक सुदृढ़ एवं शक्तिशाली जनमत तैयार किया, जिससे नव-जागरण का कार्य तीव्र गति से अग्रसर हुआ।

सामाजिक कुप्रथाएँ एवं सुधारक संस्थाएँ

भारत में असंख्य कुप्रथाएँ एवं अन्धविश्वासों ने भारतीयों को कूप-मण्डूक बना रखा था। ऐसे में सांस्कृतिक पुनर्जागरण की आवश्यकता महसूस की गई। राजा राममोहन राय, देवेन्द्रनाथ ठाकुर, केशवचन्द्र सेन, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, दयानन्द सरस्वती, विवेकानन्द आदि महापुरुषों ने भारतीय जनता को जागृत करने का कार्य किया। ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, रामकृष्ण मिशन, आर्य समाज, थियोसोफिकल, सोसायटी आदि की स्थापना की गई।

ब्रह्म समाज

आधुनिक भारत की नींव पर पहला पत्थर राजा राममोहन राय ने रखा। राजा राममोहन राय ने 1828 ई. में ब्रह्म समाज की स्थापना की। कर्मकाण्ड और अन्धविश्वास का विरोध करने के लिए इन्होंने उपनिषदों का प्रयोग किया और मूर्तिपूजा को धर्म का बाह्य आडम्बर माना। जाति प्रथा को राष्ट्र विरोधी और अमानवीय बताया, उन्होंने विधवा विवाह और स्त्री-पुरुष के समान अधिकार का समर्थन किया।

प्रार्थना समाज

1867 ई. में केशवचन्द्र सेन के प्रयासों से बम्बई प्रार्थना समाज की स्थापना हुई, जिसके उन्नायक महादेव गोविन्द रानाडे थे। उन्होंने सामाजिक रूढ़ियों व कुरीतियों के विरुद्ध निरान्तर संघर्ष किया। वे धार्मिक व सामाजिक समस्याओं का तर्कपूर्ण उत्तर देते थे। जाति व्यवस्था को अस्वीकार करते थे, उन्होंने स्त्री शिक्षा व विधवा पुनर्विवाह को प्रोत्साहित किया।

रामकृष्ण मिशन

- स्वामी विवेकानन्द ने 1897 ई. में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की थी। रामकृष्ण की शिक्षाओं, उपनिषद् एवं गीता के दर्शन तथा बुद्ध व यीशु के उपदेशों को आधार बनाकर विवेकानन्द ने माव मूल्यों की शिक्षा दी। उन्होंने सर्वधर्म समभाव की घोषणा की और धार्मिक मामलों में संकीर्णता की निंदा की। उन्होंने देशवासियों से स्वतन्त्रता, समानता एवं स्वतन्त्र सोच धारण करने की अपील की। विवेकानन्द एक महान मानवतावादी थे तथा उन्होंने रामकृष्ण मिशन के माध्यम से मानवीय सहायता और सामाजिक कार्य को अपना

- सर्वप्रमुख उद्देश्य बनाया, उन्होंने आध्यात्मवाद और भौतिकवाद के सन्तुलन पर बल दिया।

आर्य समाज

- आर्य समाज की स्थापना (बम्बई) स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 1875 ई. में हिन्दू धर्म और संस्कृति के उन्नयन हेतु की। पूरे देश में राष्ट्रीय भावना का संचार करने एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार करने का श्रेय भी इन्हें ही दिया जाना चाहिए। इन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' नामक ग्रन्थ का प्रकाशन हिन्दी में किया। केशवचन्द्र सेन के सुझाव पर इन्होंने आर्य समाज का सारा कामकाज हिन्दी में प्रारम्भ किया। आर्य समाज ने अनेक संस्थाओं की स्थापना की

तथा पत्र-पत्रिकाओं , उपदेशों, पुस्तकों, शास्त्रार्थों के अनुवाद हिन्दी में किए तथा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

साथ ही हिन्दी गद्य को समृद्ध कर उसे नवीन दिशा प्रदान की। इन सबके अतिरिक्त अंग्रेजी ढंग से स्कूलों की स्थापना व अंग्रेजी शिक्षा से भी समाज को आधुनिक बनाने में मदद मिली। प्रेस, नई अर्थव्यवस्था, यातायात आदि से आधुनिकता को बढ़ावा मिला। औद्योगीकरण, संचार साधनों में वृद्धि से भारत को नई गति मिली।

सांस्कृतिक जागरण सम्बन्धी संस्थाएँ

<u>संस्था</u>	<u>संस्थापक</u>	<u>वर्ष</u>
ब्रह्म समाज	राजा राममोहन राय	1828 ई.
प्रार्थना समाज	केशवचन्द्र सेन	1867 ई.
रामकृष्ण मिशन	स्वामी विवेकानन्द	1897 ई.
आर्य समाज	दयानन्द सरस्वती	1875 ई.
थियोसोफिकल सोसायटी	मैडम ब्लोवत्सकी	1875 ई.

भारतेन्दु युग

भारतेन्दु युग का उदय हिन्दी कविता के लिए नवीन जागरण के सन्देशवाहक युग के रूप में हुआ। इसे पुनर्जागरण काल भी कहा जाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के रचनाकाल को दृष्टि में रखकर संवत् 1925 से 1950 की अवधि को नई धारा या प्रथम उत्थान की संज्ञा दी। उल्लेखनीय है कि भारतेन्दु द्वारा सम्पादित मासिक परीक्षा 'कविवचन सुधा' का प्रकाशन 1868 ई. में आरम्भ हुआ। अतः भारतेन्दु युग का उदय 1868 ई. (1925 वि) से मानना उचित है। भारतेन्दु जी का रचनाकाल 1868 से 1885

ई. तक रहा है। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' का प्रकाशन 1903 ई. में संभाला था। सरस्वती पत्रिका का प्रकाशन 1900 ई. से शुरू हुआ। अतः 1868 से 1900 ई. तक की अवधि को भारतेन्दु युग कहना समीचीन है।

यह युग वस्तुतः हर क्षेत्र में पुनर्जागरण का युग है। सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, धार्मिक, साहित्यिक, शिक्षा आदि क्षेत्रों में कुछ नयापन दिखाई दे रहा था। पुनर्जागरण से नवीन प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिला। भारतेन्दु जी का युग आधुनिक हिन्दी साहित्य का प्रवेश द्वार है। इसे संक्रांति का युग भी कह सकते हैं। यह युग प्राचीन परम्पराओं और मर्यादाओं की रक्षा करते हुए भी नवीन

राजनैतिक और सांस्कृतिक चेतना को लेकर आगे बढ़ा।

इस युग में मध्यवर्गीय सामाजिक परिस्थितियों का चित्रण हुआ। साहित्य की विभिन्न विधाओं ; जैसे-निबन्ध, नाटक तथा आलोचना का सूत्रपात भी इस युग में आरम्भ हुआ। अतः साहित्यिक दृष्टि से यह युग विशेष उल्लेखनीय रहा।

विद्वानों के अनुसार भारतेन्दु युग की व्याप्ति का समय

- मिश्रबन्धु 1926-1945 वि तक,
- डॉ. राजकुमार वर्मा 1927-1957 वि तक,
- डॉ. केसरी नारायण शुक्ल 1922-1957 वि तक,
- डॉ० रामविलास वर्मा 1925-1957 वि तक

भारतेन्दुयुगीन काव्य प्रवृत्तियाँ →

भारतेन्दुयुगीन कवियों का काव्य फलक अत्यन्त विस्तृत है। उनकी रचना प्रवृत्तियाँ एक ओर भक्तिकाल और रीतिकाल से अनुबद्ध हैं, तो दूसरी ओर समकालीन परिवेश के प्रति जागरूकता का भी अभाव नहीं है। प्रवृत्तियों का विश्लेषण निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत किया जा सकता है।

राष्ट्रीयता की भावना

- भारतेन्दुयुगीन कवियों ने भारतीय जनमानस में देश प्रेम की अलख जगाई। क्षेत्रीयता से ऊपर उठकर वे सम्पूर्ण राष्ट्र की नब्ज को टटोलने लगे। भारतेन्दु

की 'विजयिनी विजय वैजयन्ती', प्रेमघन की 'आनन्द अरुणोदय', प्रतापनारायण मिश्र की 'महापर्व' और 'नया संवत्', राधाकृष्णदास की 'भारत बाहरमासा' और 'विनय' शीर्षक कविताएँ देशभक्ति की प्रेरणा से युक्त हैं। प्रेमघन ने 'हार्दिक हर्षादर्शन' कविता में इस स्वार्थपूर्ण शासन प्रक्रिया के लिए भी ईस्ट इण्डिया कम्पनी को दोषी ठहराया है। राधाचरण गोस्वामी की कविता 'हमारे उत्तम भारत देस' एवं राधाकृष्णदास की कविता 'भारत बाहरमासा' आदि कविताएँ देश प्रेम से ओतप्रोत हैं। भारतेन्दु जी की कविता का एक उदाहरण ? जिसमें अंग्रेजों द्वारा किए जा रहे शोषण का चित्र प्रस्तुत है।

भीतर भीतर सब रस चूसै, हाँसि हाँसि के तन मन धन मूसै।

जाहिर बातन में अति तेज, क्यों सखि सजन नहिं अंग्रेज।।

समाज की दुर्दशा का चित्रण तथा सामाजिक चेतना

कवियों ने सामाजिक जीवन की उपेक्षा न कर जनता की समस्याओं के निरूपण की ओर पहली बार व्यापक रूप से ध्यान दिया। भारतेन्दु युग में नारी-शिक्षा, विधवाओं की दुर्दशा, अस्पृश्यता आदि को लेकर जो सहानुभूतिपूर्ण कविताएँ लिखी गईं, उनके प्रतिपाद्य की नवीनता ने सहृदय-समुदाय को विशेष रूप से आकृष्ट किया। मध्यवर्गीय सामाजिक परिस्थितियों का चित्रण

किया, तो दूसरी ओर रूढ़ियों का विरोध करते हुए विकास चेतना की आकांक्षाओं को भी अभिव्यक्ति दी। युगीन समस्याओं की जानकारी ऐसे कवियों को भी पूरी तरह थी, किन्तु उनके समाधान के लिए वे परम्परागत धर्मशास्त्र को ही आधार बनाना चाहते थे।

- भारतेन्दु ने ‘भारत-दुर्दशा’ नाटक में वर्णाश्रम धर्म की संकीर्णता का इन शब्दों में विरोध किया ‘बहुत हमने पैलाए धर्म, बढ़ाया छुआ-छूत का कर्म।’ ‘मन की लहर’ में प्रतापनारायण मिश्र की दृष्टि बाल-विधवाओं की करुण दशा ओर गई है ‘कौन करेजों नहि कसकत सुनि विपति बालविधवन की।

हास्य एवं व्यंग्य

- भारतेन्दुयुगीन कवियों ने हास्य-व्यंग्य रचनाएँ भी कीं, परन्तु उनका हास्य उद्देश्यपूर्ण है। इस काल के कवियों ने तत्कालीन अंग्रेजी शासन, अन्धविश्वास, रुएियों आदि पर प्रकार किया है। नए जमाने की मुकरी में उन्होंने अंग्रेज, पुलिस, खिताब आदि पर व्यंग्य किए हैं। -उदाहरण

× × ×

इनकी उनकी खिदमत करो रुपया देते देते मरो!

तब आवै मोंहि करन खराब, क्यों सखी सज्जन, नहीं खिताब!!

भारतेन्दु जी ने सामाजिक कुरीतियों पर पर्याप्त व्यंग्य किए हैं। एक उदाहरण दृष्टव्य है -

मुँह जब लागे तब नहीं छूटे,
जाति मान धन सब कुछ लूटें।

सामाजिक कुरीतियाँ

पागल करि मोहि करैर खराब, क्यों सखी साजन ? नहीं सराब ॥

- हास्य-व्यंग्य की प्रवृत्ति का पूर्ण विकास भारतेन्दु के नाटकों 'पाखण्ड विडम्बन', 'वैदिकी हिंसा-हिंसा न भवति', अंधेर नगरी की प्रतापनारायण मिश्र की कविताएँ बुढ़ापा, उर्दू का स्यापा, हरगंगा आदि में हुआ है। अंधेर नगरी में

- चूरन बेचने वाले का अंग्रेजों की साम्राज्यवादी नीति पर प्रस्तुत व्यंग्य है -

चूरन साहब लोग जो खाता।

सारा हिन्द हजम कर जाता।।

भाषा व शैली

- भारतेन्दु काल में मुख्यतः मुक्तक और गति शैली का प्रयोग हुआ है। ब्रज भाषा मुख्य रही, इनके अतिरिक्त खड़ी बोली, उर्दू, बंगाली, गुजराती में काव्य रचना हुई। इस युग के कवियों ने दोहा, चौपाई, कुण्डलिया, हरिगीतिका, कवित्त जैसे छन्दों में काव्य की रचना की।
- इस युग के कवियों ने सामयिक समस्याओं पर भी काव्य लिखे। इस युग

में भारतेन्दु एक श्रेष्ठ साहित्यकार थे, जो सच्चे अर्थों में आधुनिक काल के जनक कहलाते हैं।

भारतेन्दु मण्डल के कवि

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

- भारतेन्दु जी (1850-1885 ई.) को सही अर्थों में गद्य का जनक कहा जा सकता है। उन्होंने गद्य की भाषा का संस्कार तो किया ही ब्रजभाषा को भी सुसंस्कृत किया। इनके समय में गद्य की बड़ी उन्नति हुई। प्रतापनारायण मिश्र व बालकृष्ण भट्ट ने भारतेन्दु जी के साथ मिलकर गद्य के विकास में प्रमुख भूमिका निभाई। भारतेन्दु युग में खड़ी बोली व ब्रजभाषा अत्यधिक

प्रसिद्ध रही। इनकी रचनाओं में देशहित की भावना का समावेश हुआ है।

- आचार्य शुक्ल जी भारतेन्दु के उल्लेखनीय योगदान पर ~~टिप्पणी~~ करते हुए कहते हैं कि “हमारे जीवन व साहित्य के बीच जो विच्छेद बढ़ रहा था, उसे उन्होंने दूर किया। हमारे साहित्य को नए-नए विषयों की ओर प्रवृत्त करने वाले हरिश्चन्द्र ही हुए। अल्पायु में उन्होंने विपुल एवं समृद्ध साहित्य की रचना की।”

- भारतेन्दु जी ने प्रकृति, शृंगार, कृष्ण लीला आदि का वर्णन स्वतन्त्र अनुभूति से किया। काव्य में सामाजिक एवं राजनैतिक विषयों का समावेश पहली बार

इसी युग में हुआ था। पत्र-पत्रिकाओं, निबन्धों, कविताओं को माध्यम बनाकर भारतेन्दु जी ने तत्कालीन सामाजिक कुरीतियों, साम्प्रदायिकता, रूढ़ियों आदि पर करारा प्रहार किया।

- भारतेन्दु जी ने साहित्य में देशहित एवं समाजहित की भावना का समावेश किया। उन्होंने अपने साहित्य द्वारा हिन्दी साहित्य को नवीन मार्ग दिखाया और साहित्य को नवीन विषयों की ओर प्रवृत्त किया। इनकी काव्य कृतियों की संख्या 70 है, जिनमें प्रेम मल्लिका, प्रेम सरोवर, वर्षा विनोद, विनय प्रेम पचासा, प्रेम-फुलवारी आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

- भारतेन्दु ने रीतिकालीन मुक्तों का संकलन 'सुन्दरी तिलक' नाम से किया था। इन्होंने अनेक लेखकों का पथ-प्रदर्शन किया तथा उन्हें साहित्य रचना हेतु प्रोत्साहन दिया। खड़ी बोली को परिष्कृत करने का श्रेय भी इन्हीं को प्राप्त है। कविता उनके द्वारा नई चाल में ढली। भारतेन्दु की कविता की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उसमें प्राचीन व नवीन का समन्वय देखने को मिलता है। शिल्प के क्षेत्र में उन्होंने नए-नए प्रयोग किए। हिन्दी गद्य की विभिन्न विधाओं का जन्म भी भारतेन्दु युग में हुआ। भारतेन्दु के योगदान से हिन्दी भाषा और साहित्य की उन्नति के साथ ही देश की उन्नति

हुई।

भारतेन्दु जी के प्रभाव से उनके गुप्त में साहित्यकारों का एक ऐसा मण्डल तैयार हो गया था, जिसने 'राज्य' विषय-वस्तु भाव व शैली की दृष्टि से भारतेन्दु का अनुसरण किया। इसी मण्डल को भारतेन्दु मण्डल कहते हैं।

बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'

- भारतेन्दु मण्डल के कवियों में प्रेमघन (1855-1923 ई.) का प्रमुख स्थान है, उनका जन्म उत्तर प्रदेश के जिला मिर्जापुर के एक सम्पन्न ब्राह्मणकुल में हुआ था। भारतेन्दु की भांति उन्होंने भी पद्य और गद्य दोनों में विपुल

- साहित्य रचनाएँ की हैं। साप्ताहिक 'नागरी-नीरद' और मासिक 'आनन्द कादम्बिनी' में सम्पादन द्वारा उन्होंने तत्कालीन पत्रकारिता को भी नई दिशा दी है। 'अब्र' नाम से उन्होंने उर्दू में कुछ कविताएँ लिखी हैं।
- 'जीर्ण जनपद', 'आन्नद अरुणोदय', 'हार्दिक हर्षादर्श', 'मयंक-महिमा', 'अलौकिक लीला', 'वर्षा-बिन्दु' आदि उनकी प्रसिद्ध काव्य कृतियाँ हैं, जो अन्य रचनाओं के साथ 'प्रेमघन-सर्वस्व' के प्रथम भाग में संकलित हैं। इन्होंने भारतेन्दु के आदर्शों का पूर्ण अनुसरण करते हुए उन सभी प्रवृत्तियों को अपनाया, जो भारतेन्दु जी के काव्य में मिलती हैं।

- प्रेमघन ने मुख्यतः ब्रजभाषा में काव्य रचना की है, किन्तु खड़ी बोली के लिए उनके काव्य में विरक्ति नहीं था। वे कविता में भावगति के कायल थे छहरे मुखपै घनश्याम से केश, इतै सिर मोर पखा फहरै।
जग नायकै चेरी बनाय लियो, अरी वाह री वाह अहीरनी तू।

निरधन दिन-दिन होता हैं भारत भुव सब भाँति

ताहि बचाई न रोऊ सकत निज भुज बुधि बलकान्ति।

- प्रेमघन जी कविता लिखते समय तद्युगीन परिस्थितियों का पूरा ख्याल रखते थे। राजनीति में ये बहुत रुचि रखते थे। आचार्य शुक्ल जी इनके सम्बन्ध में

- लिखते हैं “देश की दशा को सुधारने के लिए जो राजनीतिक या धर्म सम्बन्धी आन्दोलन चलते रहे, उन्हें ये बड़ी उत्कण्ठा से परखा करते थे, जब कहीं कुछ सफलता दिखाई देती, तब वह अपने लेखों व कविताओं से खुशी

प्रतापनारायण मिश्र

- ‘ब्राह्मण’ के सम्पादक प्रतापनारायण मिश्र (1856-1894 ई.) का जन्म बैजेगाँव, जिला उन्नाव में हुआ था। पिता के कानपुर चलो जाने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा वहीं हुई। ज्योतिष का पैतृक व्यवसाय न अपनाकर वे साहित्य रचना क ओर प्रवृत्त हुए। कविता, निबन्ध और नाटक उनके मुख्य रचना क्षेत्र थे। प्रतापनारायण मिश्र मूलतः विनोदी प्रकृति के थे। कविता के

क्षेत्र के इन्होंने प्रणय व्यंजना, समाज सुधार, देशभक्ति, हास्य विनोद आदि प्रवृत्तियों का परिचय दिया है।

• 'प्रेमपुष्पावली', 'मन की लहर', 'लोकोक्ति शतक', 'तृप्यन्ताम्' और 'शृंगार-विलास' उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। 'प्रताप लहरी' उनकी प्रतिनिधि कविताओं का संकलन है, किन्तु भक्ति और प्रेम की तुलना में समसामयिक

देश-दशा और राजनीति चेतना का वर्णन उन्होंने मनोयाग से किया है

• वे भावुक कवि थे और अभिव्यजना पक्ष में उनका बल व्यावहारिकता पर अधिक था। काव्य रचना के लिए उन्होंने मुख्यतः ब्रजभाषा को ही अपनाया,

- खड़ी बोली से उन्हें लगाव नहीं था। मिश्र जी की शैली सरल, सरस व रोचक थी। इन्होंने जनता के लिए लिखा था, इसलिए इनकी बोली व ढंग जनता के अनुकूल थी। इनकी हरगंगा, तृप्यन्ताम्, बुढ़ापा आदि कविताएँ हास्य व्यंग्य का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। कविता के अतिरिक्त इन्होंने गद्य साहित्य में चमत्कार दिखाया है।

सबहु लिए जात अंगरेज, हम केवल ल्यक्चर के तेज।

श्रम बिन बाते का करती है, कहूँ टेटकन गाजें टरती है।

ठाकुर जगमोहन सिंह

- ठाकुर जगमोहन सिंह मध्य प्रदेश की विजय राघवगढ़ रियासत के राजकुमार थे, उन्होंने काशी में संस्कृति और अंग्रेजी की शिक्षा प्राप्त की। वहाँ रहते हुए उनका भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से सम्पर्क हुआ, किन्तु भारतेन्दु की रचना शैली की उन पर वैसी छाप नहीं मिलती जैसी प्रेमघन और प्रतापनारायण मिश्र के कृतित्व में लक्षित होती है -
- 'प्रेमसम्पत्तिलता' (1885), 'श्यामालता' (1885), 'श्यामा-सरोजनी' (1886) और 'देवयानी' (1886), 'श्यामास्वप्न' शीर्षक उपन्यास में भी उन्होंने

- प्रसंगवश कुछ कविताओं का समावेश किया है। 'ऋतुसंहार' और 'मेघदूत' भी ब्रजभाषा की सरल कृतियाँ हैं।

बालमुकुन्द गुप्त

- रचनाकाल की दृष्टि से भारतेन्दु मण्डल के अन्तिम कवियों में से हैं। काव्य में ये भारतेन्दु को छोड़कर अन्य सबसे अधिक सशक्त एवं प्रभावशाली सिद्ध होते हैं। किसानों दुर्दशा एवं धनिकों की निष्ठुरता का निरूपण इनकी कुछ कविताओं में मार्मिक रूप से मिलता है -

जिनके कारण सब सुख पावें जिनका बोया सब जन खावें।

हाय हाय उनके बालक नित भूखे के मारे चिल्लावें।

हे धनियों क्या दीन जनों की नहिं सुनते हो हाहाकार,
जिसका मरे पड़ोसी भूखा उसके भोजन को धिक्कार।

हे बाबा जो यह बेचारे भूखों प्राण गवाएँगे,
तब कहिए क्या धनी गलाकर अशर्फियाँ भी जाएँगे,

उपर्युक्त दोनों दोहों में गुप्त जी ने आर्थिक विषमता का उल्लेख किया है। वे धनी वर्ग का हृदय परिवर्तन करना चाहते हैं। राष्ट्र की आर्थिक स्वतन्त्रता के लिए ये स्वदेशी आन्दोलन के समर्थक हैं। यथा -

मारकीन मलमल बिना चलत कछू नहिं काम।

परदेसी जुलहान के मानहुँ भए गुलाम॥

अम्बिकादत्त व्यास

- कविवर दुर्गादत्त व्यास के पुत्र अम्बिकादत्त व्यास (1858-1900) काशी के निवासी सुकवि थे। वे संस्कृत और हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे और दोनों भाषाओं में साहित्य-रचना करते थे। 'पीयूष-प्रवाह' के सम्पादक के रूप में भी उन्होंने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है, उनकी कृतियों में 'पावस पचासा' (1866), 'सुकवि-सतसई' (1887) और 'हो हो होरी' उल्लेखनीय हैं। इनकी रचना ललित ब्रजभाषा में हुई है।
- बिहारी-बिहार उनकी एक अन्य प्रसिद्ध रचना है, जिसमें महाकवि बिहारी के दोहों का कुण्डलिया छन्द में भाव विस्तार किया गया है।

राधाकृष्ण दास

- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के फुफेरे भाई राधाकृष्ण दास बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। कविता के अतिरिक्त उन्होंने नाटक, उपन्यास और आलोचना के क्षेत्रों में भी उल्लेखनीय साहित्य की रचना की। 'भारत-बारहमासा' और 'देश-दशा' समसामयिक भारत के विषय में उनकी प्रसिद्ध कविताएँ हैं। राधाकृष्ण दास की कुछ कविताएँ 'राधाकृष्ण-ग्रन्थावली' में संकलित हैं।
- अन्य कवित भारतेन्दु युग के अन्य रचनाकारों की रचनाओं में भक्तिभावना तथा श्रृंगार वर्णन की प्रमुखता रही है। इस सन्दर्भ में सर्वप्रथम नवनीत

चतुर्वेदी का नाम आता है। गोविन्द गिल्लाभाई कृत 'शृंगार पचीसी' रीति पद्धति की सरस रचना है। गोविन्द गिल्लाभाई कृत शृंगार सरोजनी, पावस पयोनिध, राधामुख-षोडसी, और षड्भक्तु, भक्ति और प्रेमवर्णन सम्बन्धी रचनाएँ हैं। दिवाकर भट्ट कृत 'नखशिख', नवोदारत्न, रामकृष्ण वर्मा कृत बलवीर पचासा, गुलाब सिंह कृत, प्रेम सतसई, दुर्गादत्त व्यास कृत अधमोद्धार शतक आदि उल्लेखनीय हैं।

भारत में पत्रकारिता का आरम्भ

- भारत में पत्रकारिता की शुरुआत 1780 ई० में हुई। उस समय जेम्स ऑगस्टस हिक्की द्वारा प्रथम मुद्रित अंग्रेजी समाचार 'कलकत्ता जेनरल

एडवर्टाइजर (हिवकी गजट) प्रकाशित किया गया था। सन् 1780-1818 तक भारतीय पत्रकारिता पर केवल अंग्रेज ही छाए रहे तथा सभी पत्र अंग्रेजी में ही छपे। भारतीय भाषाओं में समाचार-पत्रों का इतिहास 1818 ई. से प्रारम्भ होता है।

पहला भारतीय समाचार-पत्र 1816 ई. में कलकत्ता में गंगाधर भट्टाचार्य द्वारा बंगाल गजट नाम से निकाला गया। यही साप्ताहिक समाचार-पत्र था, परन्तु यह अंग्रेजी भाषा में छपा था। हिन्दी का प्रथम समाचार-पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' था। इसका प्रकाशन 30 मई 1826 ई. में कलकत्ता से एक साप्ताहिक पत्र

के रूप में हुआ। इसका मुख्य उद्देश्य भारतीयों को जाग्रत करना था भारतीयों के हितों की रक्षा करना था। इस प्रकार भारतेन्दु के आगमन से पूर्व ही पत्रकारिता का आरम्भ हो चुका था।

19वीं शताब्दी की हिन्दी पत्रकारिता

19वीं शताब्दी की हिन्दी पत्रकारिता को तीन चरणों बांटा जा सकता है

- प्रथम उत्थान (1826-1867) भारतेन्दु के उदय से पूर्व पत्र-पत्रिकाओं के विकास का प्रथम दौर पूरा हो चुका था। इस प्रकार हिन्दी पत्रकारिता का आरम्भ भारतेन्दु पूर्व युग से हुआ। पत्र-पत्रिकाओं का सीधा सम्बन्ध जन-जागरण से होता है। उस समय जन-जागरण का केन्द्र कलकत्ता था।

- हिन्दी पत्रकारिता का आरम्भ वहीं से हुआ। 'उदन्त मार्तण्ड' के बाद निकलने वाले प्रमुख - समाचार पत्र हैं - बंगदूत (1829), प्रजामित्र (1834), बनारस अखबार (1845), मालवा अखबार (1849), सुधाकर (1850), बुद्धिप्रकाश (1852) समाचार सुधावर्षण (1854), प्रजाहितैषी (1855), तत्वबोधिनी पत्रिका (1865), ज्ञानप्रदायिनी पत्रिका (1866), वृत्तान्त विलास (1867) आदि।
सुधावर्षण
- इस प्रथम उत्थान में ज्यादातर साप्ताहिक पत्रों का प्रकाशन हुआ। इस काल की पत्र-पत्रिकाओं का उद्देश्य जनता में जागरण तथा सुधार की भावना

उत्पन्न करना था। साथ ही ये पत्रिकाएँ अपनी-अपनी सीमाओं में अन्याय का प्रतिकार भी कर रही थीं। ये पत्रिकाएँ दो या तीन भाषाओं में निकल रही थीं, जिनमें हिन्दी भाषा अपरिष्कृत और अपमार्जित थी।

- द्वितीय उत्थान - (1868-1885) - हिन्दी पत्रकारिता के द्वितीय उत्थान में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने हिन्दी भाषा के प्रत्येक अभाव दूर करने का प्रयास किया। इस काल में हिन्दी भाषा का रूप स्थिर और परिमार्जित हुआ। जागरण सुधार की भावना के प्रसार हेतु गम्भीर लेख लिखे गए तथा शुद्ध साहित्यिक पत्रिकाओं का प्रकाशन भी हुआ।

- भारतेन्दु के जीवन काल में प्रकाशित होने वाली कुछ प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ इस प्रकार हैं - कविवचन सुधा (1868), जगत समाचार (1869), बिहार बिन्धु (1871), काशी पत्रिका (1875), हिन्दी प्रदीप (1877), सारसुधानिधि (1879), आनन्द कादम्बिनी (1881), भारतेन्दु (1883), ब्राह्मण (1883), कान्यकुब्जप्रकाश (1884), भारतोदय (1885)। इनमें मुख्यतः बालबोधिनी पत्रिका नारी शिक्षा से सम्बन्धित थी।
- तृतीय उत्थान (1886-1900)- हिन्दी पत्रकारिता के तृतीय उत्थान में 200 से अधिक छोटी-बड़ी पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हुईं। इनमें हिन्दी भाषा की

- शक्ति ओर लोकप्रियता का बोध होने के साथ-साथ देशव्यापी जनजागरण की सूचना भी मिलती है।
- इस युग की प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ इस प्रकार हैं - आर्यवर्त्त (1887), रहस्य चन्द्रिका (1888), हिन्दी बंगवासी (1890), नगरी-नीरद (1893), साहित्य सुधानिधि (1894), नागरी प्रचारिणी पत्रिका (1896), समस्यापूर्ति (1897), रसिक पत्रिका (1897), उपन्यास (1898), पण्डित पत्रिका (1898), सरस्वती (1900)।
- इस तीसरे उत्थान तक राजनीतिक चेतना का केन्द्र बंगाल ही था। इन 25 वर्षों में हिन्दी पत्रकारिता अनेक दिशाओं में विकसित हुई।

भारतेन्दुयुगीन कवि व उनकी कृतियाँ

कवि

कृतियाँ

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

1850-1885 ई.

प्रेममाफि, प्रेम सरोवर, प्रेम माधुरी,

वर्षा विनोद, प्रेम फुलवारी, मधु-मुकुल,

विनय प्रेम पचासा

बद्रीनारायण चौधीर

प्रेमघन 1855-1923 ई.

ब्रजचन्द पंचक, जीर्ण जगपद, आजन्द

अरुणोदय, लालित्य लहरी, हार्दिक

हर्षोदर्श, अलौकिक लीला, वर्षा बिन्दु

प्रतापनारायण मिश्र

प्रेम पुष्पावाली, मन की लहर, शृंगारं

विलास, लोकोक्तिशतक, तृप्यन्ताम्

भारतेन्दुयुगीन कवि व उनकी कृतियाँ

<u>कवि</u>	<u>कृतियाँ</u>
जगमोहन सिंह 1857-1899 ई.	प्रेम सम्पत्तिलता, श्यामा सरोजनी, देवयानी, ऋतु संहार (अनूदिन), मेघदूत (अनूदित)
अम्बिकादत्त व्यास 1858-1900	सुरवि सतसई, हो हो होरी, बिहारी विहार, पावन पचासा
नवीनत चतुर्वेदी 1868-1919 ई.	कुब्जा पच्चीसी

भारतेन्दुयुगीन कवि व उनकी कृतियाँ

<u>कवि</u>	<u>कृतियाँ</u>
राधाकृष्ण दास 1865-1907 ई.	भारत बारहमासा, देश दशा, रहीम के दोहों पर कुण्डलियों की रचना की।
गोविन्द गिल्लाभाई	शृंगार सरोजनी, पावन पयोनिधि, राधामुख, षोडसी, षड्भृत्य, नीति विनोद
दुर्गादत्त व्यास	अधमोद्धार शतक
राधाचरण गोस्वामी	नवभक्तमाल